ट्रांसजेंडर कविता

संजय कुंदन

N 28/19 P.10

साहित्य अकादेमी ने अपने वार्षिक आयोजन 'साहित्योत्सव' के अंतर्गत ट्रांसजेंडर कवि सम्मेलन आयोजित करने का फैसला किया है। निश्चय ही यह एक सराहनीय पहल है। कैसा संयोग है कि इस साल हिंदी के जिस उपन्यास को साहित्य अकादेमी ने पुरस्कृत किया है, वह भी ट्रांसजेंडर समुदाय पर लिखा गया है। अकादेमी ने पिछले साल कोलकाता में ऐसा कवि सम्मेलन आयोजित किया था, जिसे जबर्दस्त सफलता मिली। इससे उत्साहित होकर उसने दिल्ली में यह आयोजन करने का फैसला किया। दो फरवरी को होने जा रहे इस कवि सम्मेलन में ट्रांसजेंडर समुदाय के 14 कवि शिरकत करेंगे। हमेशा से उत्पीड़ित और उपेक्षित एक समुदाय को मुख्यधारा में लाने का यह एक अहम माध्यम हो सकता है। वैसे बहुतों के लिए शायद यह आश्चर्य की बात हो कि इस समुदाय के लोग कविता भी लिखते हैं। सचाई यह है कि इस समुदाय के कई लोगों ने काफी संघर्ष करके उच्च शिक्षा हासिल की है और बड़े पदों पर कार्यरत भी हैं। कवि सम्मेलन के उद्घाटन का जिम्मा मानबी वंद्योपाध्याय को सौंपा गया है। मानबी नदिया जिला स्थित कृष्णानगर विमिंस कॉलेज की प्रिंसिपल हैं। उन्होंने 2006 में बांग्ला साहित्य में पीएचडी की डिग्री हासिल की। यह उपलब्धि हासिल करने वाली वह पहली ट्रांसजेंडर हैं। वह ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए 'ओबो मानब' नामक पत्रिका निकालती हैं।

कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करने जा रहीं देबज्योति भट्टाचार्जी एक कॉलेज में लेक्चरर हैं। वह कोलकाता यूनिवर्सिटी से पीएचडी भी कर रही हैं। 14 कवियों में ज्यादातर बंगाल से हैं जबकि रेशमा प्रसाद पटना और रवीना बारिहा रायपुर से हैं। जाहिर है बंगाल के उदार सामाजिक माहौल में इस समुदाय को और प्रदेशों की तुलना में आगे आने के ज्यादा अवसर मिले हैं। मानवी वंद्योपाध्याय का अपने समुदाय से कहना है कि शिक्षित होने से उनकी सारी समस्याएं सुलझ सकती हैं। शिक्षा प्राप्त करने के कारण ही इस समुदाय के कई लोगों ने कविता द्वारा अपने भावों को व्यक्त किया है। उनकी कविताएं उनकी दर्द भरी जिंदगी का आख्यान हैं। वे इस समाज पर सवाल उठाती हैं जिन्होंने उन्हें सामान्य मनुष्य के दर्जे से भी दूर रखने की कोशिश की। इस समुदाय के लिए अब भी सामान्य इंसान की तरह जीना आसान नहीं है। एक बार पटना में मेरी एक ट्रांसजेंडर से मुलाकात हुई थी, जो एक नर्स का काम करती थी। उसने मुझसे बार-बार कहा कि मैं किसी को न बताऊं कि वो ट्रांसजेंडर है। लोगों को पता चल गया तो उसकी नौकरी चली जाएगी। दरअसल समाज अभी भी उनके प्रति सहज नहीं हो पाया है। मगर हालात बदलेंगे जरूर। बहरहाल उनकी कविताएं सुनना कड़वे सच से साक्षात्कार करना होगा। अन्य संस्थाओं को भी ऐसा आयोजन करना चाहिए। संभव है जल्दी ही दलित साहित्य की तरह ट्रांसजेंडर साहित्य की एक मुकम्मल पहचान बने।

में इमामों को इकट्ठा करके उनका वेतन बढ़ाने की घोषणा की है। उनका वेतन दस

की कोशिश कर रहा है। सरकार की पोल खोलने के लिए भाजपा कार्यकर्ता पूरी दिल्ली में ढोल बजाएंगे।

सरकार विकास के लिए काम करेगी, लेकिन उन्हें निराशा हाथ लगी। लोगों में इस सरकार को लेकर आक्रोश है। यही

केक काटते सांसद व दिल्ली भाजपा अध्यक्ष मनोज तिवारी ● जागरण

कारण है कि निगम चुनाव में आप को 272 में से 67 सीटें भी नसीब नहीं हुईं। अन्य राज्यों में भी आप उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो रही है। उसे नोटा से भी

सम्मान

साहित्य अकादमी की ओर से कमानी सभागार में आयोजित हुआ साहित्य अकादमी पुरस्कार अर्पण समारोह

DJ 30/1/19 P12

साहित्योत्सव में अकादमी पुरस्कार विजेता सम्मानित

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित छह दिवसीय साहित्योत्सव के दूसरे दिन भी साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों ने समां बांधा। उत्सव की शुरुआत अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मेलन से हुई। विभिन्न सत्र में 'आदिवासी साहित्य की विशिष्टता', 'आदिवासी साहित्य : चुनौतियां और समाधान' व सतरूपा दत्ता मजूमदार साहा की अध्यक्षता में आयोजित कवि सम्मेलन ने लोगों को आदिवासी साहित्य से रू-ब-रू कराया।

कवि सम्मेलन में अनुराधा मुंडू, अन्ना माधुरी तिर्की, विश्वासी एक्का, प्रिस्का कुजूर, इंदुमती लमाणी, अवि माया थापा मनगर व क्रैरी मोग चौधुरी सरीखी कवयत्रियों ने अपना काव्य पाठ किया। वहीं, सुबह साढ़े 10 बजे से आयोजित 'पुरस्कार विजेताओं से मीडिया की बातचीत' सत्र में साहित्य अकादमी पुरस्कार-2018 के विजेता रचनाकारों ने अपनी पुरस्कृत कृति और लेखन यात्रा पर प्रकाश डाला। इस सत्र में लेखिका चित्रा मुद्गल (हिंदी), सनन्त तांति (असमिया), संजीव चट्टोपाध्याय (बांग्ला), शरीफा विजलीवाला (गुजराती), मुश्ताक अहमद मुश्ताक (कश्मीरी), वीणा ठाकुर (मैथिली), रमाकांत शुक्ल (संस्कृत) व रहमान अब्बास (उर्दू) समेत 21 भाषाओं के उपस्थित रचनाकार लोगों से मुखातिब हुए। सभी पुरस्कृत रचनाकारों को शाम साढ़े पांच बजे कमानी सभागार में सम्मानित किया गया। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि साहित्य अकादमी के सदस्य मनोज दास व विशिष्ट अतिथि प्रख्यात श्रीलंकाई लेखक और साहित्य अकादमी के प्रेमचंद फेलोशिप से सम्मानित सांतन अय्यातुरै मौजूद रहे। साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने विजेताओं को पुरस्कृत किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि साहित्य अकादमी पुरस्कारों ने जो प्रतिष्ठा प्राप्त की है, वह हमारी परंपराओं के प्रति वो निष्ठा है, जो हमने वर्षों के परिश्रम से हासिल की है। भारत की सांस्कृतिक विविधता ही वह प्रेरक तत्व है, जो हमें एक दूसरे के प्रति संवाद स्थापित करने का अवसर प्रदान करती है। भूमंडलीकरण के इस दौर में भी हमारी भाषाई विविधता को बचाए रखने के लिए साहित्य की आवश्यकता और उसका सम्मान किया जाना जरूरी है। दूसरे दिन कार्यक्रम की आखिरी प्रस्तुति मशहूर नृत्यांगना सोनल मानसिंह और समूह द्वारा नाट्य कथा मंचन कृष्णा रही।

कमानी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में लेखिका चित्रा मुद्गल को सम्मानित करते साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ● जागरण

'नाला सोपारा अपराध बोध से उपजी कृति'

H 30.1.19 p.6.

नई दिल्ली | वरिष्ठ संवाददाता

पोस्ट बॉक्स 203, नाला सोपारा एक अपराध बोध से उपजी कृति है। हिंदी भाषा की श्रेणी में वर्ष 2018 का साहित्य अकादेमी पुरस्कार जीतने वाली चित्रा मुद्गल ने मंगलवार को यह बातें कहीं।

मुद्गल ने कहा कि यह रचना ट्रांसजेंडर लोगों की पहचान से जुड़ी हुई है। कुछ रचनाकारों की कृतियां उनके अपराध-बोध की संतानें होती हैं। मैं यह उपन्यास लिखने के बाद भी उस अपराध-बोध से मुक्त नहीं हो पाई हूं। उन्होंने कहा कि दलित, स्त्रियों को भी कुछ ना कुछ अधिकार उपलब्ध हैं, लेकिन ट्रांसजेंडर को आज भी हमने तिरस्कृत कर उनसे मानवीय अधिकार तक छीने रखे हैं।

चित्रा मुद्गल बोलीं

- हिंदी भाषा के लिए मुद्गल, उर्दू के लिए रहमान अब्बास पुरस्कृत
- कमानी सभागार में पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन

साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता : अकादेमी ने साहित्योत्सव के दूसरे दिन मंगलवार शाम को साहित्य अकादमी पुरस्कार 2018 के विजेताओं को पुरस्कृत किया। कमानी सभागार में पुरस्कार अर्पण समारोह कार्यक्रम में हिंदी भाषा के लिए चित्रा मुद्गल, उर्दू के लिए रहमान अब्बास समेत कुल 22 लेखकों को उनकी रचनाओं के लिए पुरस्कृत किया गया। इसमें सनन्त तांति (असमिया), संजीव चट्टोपाध्याय (बांग्ला), रितुराज बसुमतारी (बोडो), इन्दरजीत केसर (डोगरी), शरीफा विजलीवाला (गुजराती), केजी. नागराजप्प (कन्नड), मुश्ताक अहमद मुश्ताक (कश्मीरी), परेश नरेंद्र कामत (कोंकणी), वीणा ठाकुर (मैथिली), एम रमेशन नायर (मलयालम), बुधिचंद्र हैस्नांबा (मणिपुरी), मधुकर सुदाम पाटील (मराठी), लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं (नेपाली), मोहनजीत सिंह (पंजाबी), राजेश कुमार व्यास (राजस्थानी) आदि को पुरस्कार प्रदान किया गया।

24مصنفین ساہتیہ اکادمی کے ایوارڈسے سرفراز

نئی دہلی (یواین آئی) اردو ادیب رحمٰن عباس سمیت 24 مصنفین کو منگل کو ساہتیہ اکیڈمی ایوارڈ سے نوازا گیا۔ اکیڈمی کے صدر اور کنڑ کے نامور ڈرامہ نگار چندر شیکھر کمبار نے ایک پروقار تقریب میں ان مصنفین کو سال 2018 کیلئے یہ ایوارڈ پیش کیا۔ ایوارڈ میں ایک لاکھ روپے کی رقم، توصیفی سند، مومنٹو اور شال شامل ہے۔ انگریزی کے مصنف انیس سلیم اور اوڑیا مصنف داشرتھي داس کی غیر موجودگی میں یہ ایوارڈ ان کے نمائندوں نے حاصل کئے۔ 65 سالہ چترامدگل کو یہ ایوارڈ 'پوسٹ باکس 203 چینل سوپارا' پر دیا گیا جو ایک خواجہ سرا کی زندگی پر مبنی ہے۔ گذشتہ 45 برسوں سے ادب میں سرگرم مسز مدگل کی پہلی کہانی 1964 میں 'سفید سینارا' نام سے' اکنامک ٹائمز' میں شائع ہوئی تھی۔ مسٹر کمبار نے راجستھانی زبان کے لئے راجیش کمار ویاس، اردو کے لئے رحمان عباس، میتھلي کے لئے وینا ٹھاکر، سنسکرت کے لئے رما کانت شکلا اور پنجابی کیلئے موھن جیت کو یہ ایوارڈ پیش کیا۔ ایوارڈ حاصل کرنے والے دیگر مصنفین میں۔ سنجیو چٹوپادھیائے بنگلہ، سنت تانتی آسامی، رتوراج بسومتاري بوڈو، اندرجیت کیسریا ڈوگری، شریفہ بجلي والا

گجراتی، کے جی ناگراجپا کنڑ، مشتاق احمد مشتاق کشمیری، پرلیش نریندر کامت کونکنی، ایس رامیشن نائر ملیالم، بدھی چندر رھیسنا بامنی پوری، ایم ایس پاٹل مراٹھی، لوکناتھ اپادھیائے چاپاگائی نیپالی، شیام بیسرا سنتھالی، کھیمین یو ملاي سندھی، ایس رام کرشنن تمل اور کولاکري اناک، تیلگو شامل ہیں۔ تقریب کے مہمان خصوصی منوج داس، مہمان ذی وقار اور سری لنکا کے مشہور مصنف سنتان ایا توری نے بھی خطاب کیا۔ اکیڈمی کے سکریٹری کے شری نواس راؤ نے مہمانوں کا استقبال کیا جبکہ اظہار تشکر مادھو کوشک نے کیا۔

35वें साहित्योत्सव का भव्य शुभारंभ

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित छह दिवसीय साहित्योत्सव-2019 का सोमवार को भव्य शुभारंभ हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि व पद्मभूषण सम्मान प्राप्त लेखक व दार्शनिक मृणाल मिरी ने पारंपरिक दक्षिण भारतीय वाद्य यंत्रों के स्वरों के बीच दीप प्रज्वलित कर 35वें साहित्योत्सव की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उनके साथ साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष माधव कौशिक, सचिव के. श्रीनिवास राव समेत बड़ी संख्या में साहित्य क्षेत्र के दिग्गजों की उपस्थिति रही।

छह दिवसीय साहित्योत्सव-2019 के पहले दिन साहित्य अकादमी भाषा सम्मान प्राप्त करने वाले रचनाकारों के साथ साहित्य अकादमी के सदस्य● जागरण

प्रदर्शनी करवा रही है अकादमी की उपलब्धियों से रूबरू: छह दिवसीय पुस्तक एवं तस्वीर प्रदर्शनी के जरिए पहले दिन साहित्यप्रेमियों को जहां विगत वर्ष की अकादमी की उपलब्धियों के बारे में पता चला वहीं, राष्ट्रपिता गांधी के 150वें जन्म वर्ष के उपलक्ष्य में अकादमी द्वारा बनाए विशेष कार्नर ने भी आगंतुकों का ध्यान खींचा। साहित्यिक गतिविधियों की शुरुआत दोपहर दो बजे से आयोजित 'साहित्य अकादमी भाषा सम्मान समारोह' से हुई, जिसमें कालजयी, मध्यकालीन साहित्य व क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रोत्साहन में उल्लेखनीय योगदान देने वाले आठ रचनाकारों को सम्मानित किया गया। इसके बाद 'अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मेलन' आयोजित हुआ, जिसमें प्रख्यात बांग्ला लेखिका अनीता अग्निहोत्री के सानिध्य में 36 भाषाओं की 43 आदिवासी लेखिकाओं ने अपना काव्यपाठ किया। पहले दिन की आखिरी प्रस्तुति गोपी कृष्ण सोत्ती के बैगा युवा नृत्य दल (छत्तीसगढ़) द्वारा बैगा नृत्य की रही।

आज दिया जाएगा साहित्य अकादमी पुरस्कार: 24 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को उनकी श्रेष्ठ कृति के लिए साहित्योत्सव के दूसरे दिन साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया जाएगा। कॉपरनिकस मार्ग स्थित कमानी सभागार में मंगलवार शाम साढ़े पांच बजे से आयोजित 'साहित्य अकादमी पुरस्कार-2018 अर्पण' समारोह के बाद मशहूर नृत्यांगना सोनल मानसिंह की नृत्य प्रस्तुति भी होगी। इससे पहले सुबह साढ़े 10 बजे से रवींद्र भवन सभागार में 'पुरस्कार विजेताओं की मीडिया से बातचीत' सत्र भी होगा।

भाषा सम्मान से नवाजे गए 8 रचनाकार

मृणाल मिरी द्वारा साहित्य अकादमी प्रदर्शनी का उद्घाटन

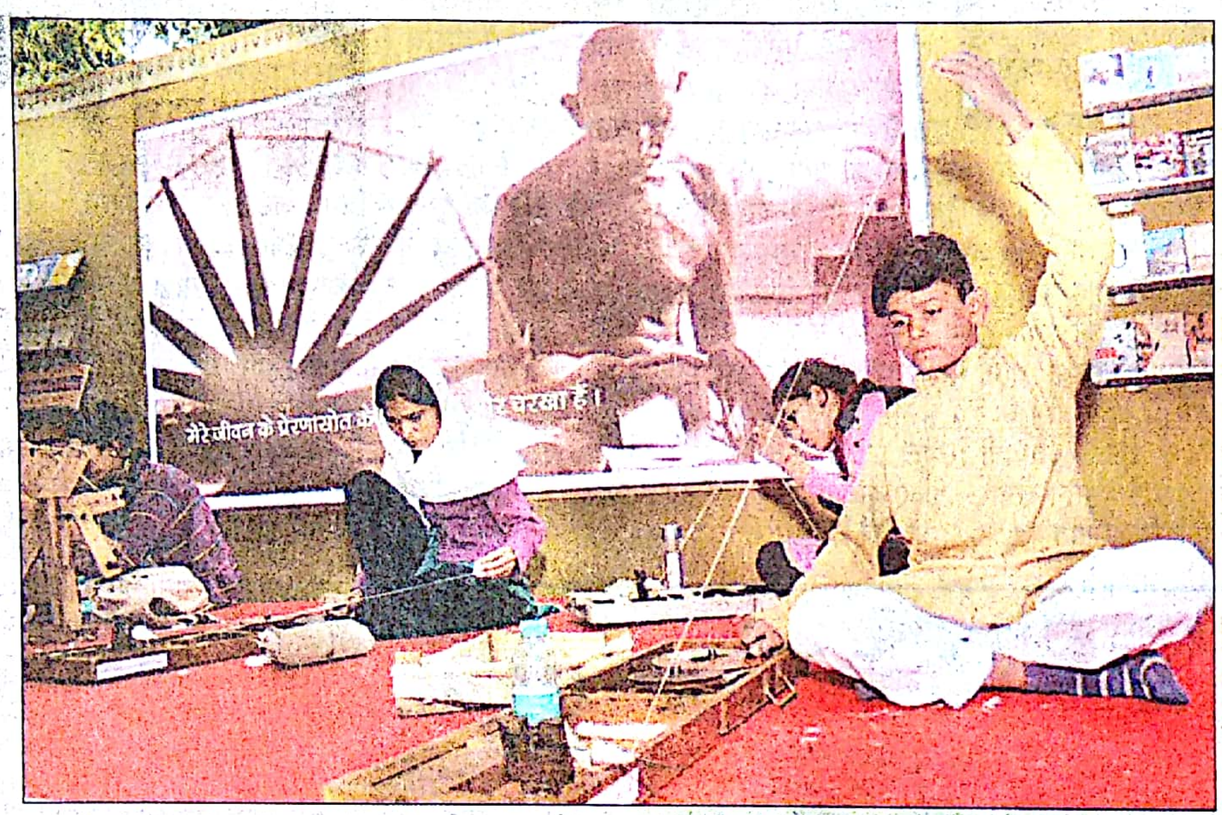

कार्यक्रम के दौरान धागा बनाने का प्रक्रिया का भी प्रदर्शन किया गया।

नई दिल्ली, 28 जनवरी (नवोदय टाइम्स): साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित वार्षिक उत्सव- साहित्योत्सव का आगाज सोमवार को साहित्य अकादमी की प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ। प्रदर्शनी में अकादमी की वर्षभर की गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शनी का उद्घाटन पद्म भूषण सम्मान प्राप्त प्रख्यात लेखक, दार्शनिक, शिक्षाविद् एवं राज्य सभा पूर्व सांसद मृणाल मिरी द्वारा रवींद्र भवन परिसर में किया गया। इस अवसर पर पारम्परिक दक्षिण भारतीय वाद्य यंत्रों के स्वरों के बीच दीप प्रज्जवलन भी किया गया। इस दौरान साहित्य अकादमी अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष माधव कौशिक, सचिव के. श्रीनिवासराव एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं के संयोजक भी उपस्थित रहें।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन का पहला दिन

अपने सम्बोधन में साहित्य अकादेमी सचिव के. श्रीनिवासराव ने बताया कि प्रदर्शनी में महात्मा गांधी के 150वें जन्म वर्ष के उपलक्ष्य में एक विशेष कॉर्नर बनाया गया है। जिसमें महात्मा गांधी द्वारा लिखित और उन पर लिखी गईं लगभग 700 पुस्तकें प्रदर्शित की जा रही हैं। उन्होंने आने वाले दिनों में साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों विशेषकर अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन और ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अकादमी ने 2018 में 501 साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें नागालैंड, मिजोर, अंडमान और निकोबार में पहली बार कार्यक्रम आयोजित किए। 493 पुस्तकें प्रकाशित की, 197 से ज्यादा पुस्तक मेलों में अकादमी शामिल हुई और पुस्तकों की बिक्री राशि 425 करोड़ रही। उद्घाटन पश्चात सचिव ने विशिष्ट अतिथियों को पूरी प्रदर्शनी का अवलोकन कराया।

दोपहर 2 बजे साहित्य अकादमी भाषा सम्मान अर्पण समारोह रवींद्र भवन परिसर में आयोजित हुआ। साहित्य अकादेमी द्वारा भाषा सम्मान कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य एवं क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रोत्साहन में उल्लेखनीय योगदान करने वाले विद्वानों/लेखकों को प्रदान किए जाते हैं। इस वर्ष कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य के लिए भाषा सम्मान से पुरस्कृत लेखक हैं-योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरुण' (उत्तरी क्षेत्र), गगनेंद्र नाथ दाश (पूर्वी क्षेत्र), शैलजा शंकर बापट (पश्चिमी क्षेत्र) और कोशली-संबलपुरी के लिए प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी, हलधर नाग, पाइते भाषा के लिए एच.नेंगसाङ और हरियाणवी के लिए हरिकृष्ण द्विवेदी एवं शमीम शर्मा।

भाषा सम्मान साहित्य अकादेमी अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान किए गए। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि भाषाओं को लेकर हमारी स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण भी है और भाग्यशाली भी। देश में 4 हजार से ज्यादा भाषाएं एवं बोलियां हैं, मगर कुछ अंतराल में कुछ भाषाएं हमारे बीच से गायब होती जा रही हैं। कार्यक्रम का समाहार वक्तव्य साहित्य अकादमी उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने देते हुए कहा कि देश की भाषा विविधता हमारे लिए एक काल पात्र की तरह है जिसमें ज्ञान के हजारों पन्ने सुरक्षित हैं। यह वह ज्ञान है जो हमारे पूर्वजों ने सदियों से अपने अनुभवों के आधार पर तैयार किया है। अपने स्वागत भाषण में अकादेमी सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि अकादमी इन पुरस्कारों के जरिए अलिखित और बातचीत भाषाओं/बोलियों को बचाने का प्रयास कर रही है। भाषा सम्मान प्राप्त करने के बाद पुरस्कृत रचनाकारों ने पाठकों के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत किए। सभी का मानना था कि नई पीढ़ी को अधिक सजगता से उनका साथ देकर इन भाषाओं को बचाना होगा।

दोपहर 3 बजे अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन आयोजित किया गया जिसकी विशिष्ट अतिथि प्रख्यात बांग्ला लेखिका अनीता अग्निहोत्री थी। स्वागत भाषण देते हुए अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि आदिवासी साहित्य सबसे प्राचीन साहित्य है और इसको सुरक्षित रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। अकादेमी इस तरह का आयोजन पहली बार कर रही है और आगे भी करती रहेगी। इस कार्यक्रम में 36 भाषाओं की 43 आदिवासी लेखिकाओं को अपनी रचना प्रस्तुत करेंगी। शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत बैगा नृत्य की प्रस्तुति की गई।

साहित्योत्सव शुरू, आठ रचनाकार को भाषा सम्मान

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी की ओर से प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने वाले साहित्योत्सव 2019 का सोमवार से आगाज हो गया। इसके साथ ही साहित्य अकादेमी की प्रदर्शनी के उद्घाटन हुआ। इस प्रदर्शनी में अकादेमी की वर्षभर की गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शनी का उद्घाटन शिक्षाविद् और राज्यसभा सांसद मृणाल मिरी ने रवींद्र भवन परिसर में किया। इस अवसर पर पारंपरिक दक्षिण भारतीय वाद्य यंत्रों के स्वरों के बीच दीप प्रज्जवलन भी किया गया। मृणाल मिरी के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष माधव

कौशिक, अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव व विभिन्न भारतीय भाषाओं के संयोजक भी उपस्थित थे। अपने सम्बोधन में साहित्य अकादेमी के सचिव ने बताया कि इस प्रदर्शनी में जहां पिछले वर्ष की प्रमुख गतिविधियों को दर्शाया गया है, वहीं महात्मा गांधी के 150वें जन्म वर्ष के उपलक्ष्य में एक विशेष कॉर्नर बनाया गया है, जिसमें महात्मा गांधी द्वारा लिखित और उन पर लिखी गई लगभग 700 पुस्तकें भी प्रदर्शित की जा रही हैं। उन्होंने आने वाले दिनों में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों विशेषकर अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन और ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन के बारे में भी जानकारी दी। साहित्य अकादेमी की वर्ष 2018 की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि पिछले वर्ष अकादेमी द्वारा 501 साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें नागालैंड, मिजोरम और अंडमान और निकोबार में पहली बार कार्यक्रम आयोजित किए गए। साथ ही उन्होंने अकादेमी द्वारा 493 पुस्तकें प्रकाशित करने की जानकारी दी।

संक्षिप्त समाचार

छह दिवसीय साहित्योत्सव का हुआ आगाज

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : साहित्य अकादमी में सोमवार को छह दिवसीय साहित्योत्सव का उद्घाटन प्रख्यात लेखक मृणाल मिरी ने किया। इस दौरान साहित्य अकादेमी की प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर पारंपरिक दक्षिण भारतीय वाद्य यंत्रों के स्वरों के बीच दीप प्रज्ज्वलन भी किया गया। इस मौके पर साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने कहा कि इस प्रदर्शनी में महात्मा गांधी के 150वीं जंयती के उपलक्ष्य में एक विशेष कॉर्नर बनाया गया है, जिसमें महात्मा गांधी द्वारा लिखित और उन पर लिखी गईं लगभग 700 पुस्तकें भी प्रदर्शित की जा रही हैं। उन्होंने आगे कहा कि आदिवासी साहित्य सबसे प्राचीन साहित्य है और इसको सुरक्षित रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। अकादमी इस तरह का आयोजन पहली बार कर रहा है और आगे भी उन्हें समय-समय पर मंच प्रदान करती रहेगी। ज्ञात हो कि इस कार्यक्रम में 36 भाषाओं की 43 आदिवासी लेखिकाओं को अपनी रचना प्रस्तुत करेंगी।

per.loksatya.com

लोकसत्य

साहित्योत्सव शुभारंभ के साथ आठ लेखकों को मिला भाषा सम्मान

नई दिल्ली, लोकसत्य। साहित्य अकेडमी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने वाला वार्षिक उत्सव- साहित्योत्सव 2019- का आगाज साहित्य अकेडमी की प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ। इस प्रदर्शनी में अकेडमी की वर्षभर की गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शनी का उद्घाटन पद्म भूषण सम्मान प्राप्त प्रख्यात लेखक, दार्शनिक, शिक्षाविद् एवं राज्य सभा के पूर्व संसद सदस्य मृणाल मिरी ने रवींद्र भवन परिसर में किया। इस अवसर पर पारंपरिक दक्षिण भारतीय वाद्य यंत्रों के स्वरों के बीच दीप प्रज्ज्वलन भी किया गया। मृणाल मिरी के साथ साहित्य अकेडमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष माधव कौशिक, साहित्य अकेडमी के सचिव के. श्रीनिवासराव एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं के संयोजक भी उपस्थित थे।

साहित्य अकेडमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने बताया कि इस प्रदर्शनी में जहाँ पिछले वर्ष की प्रमुख गतिविधियों को दर्शाया गया है वहीं महात्मा गाँधी के 150वें जन्म वर्ष के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्नर बनाया गया है, जिसमें महात्मा गाँधी द्वारा लिखित और उन पर लिखी गईं लगभग 700 पुस्तकें भी प्रदर्शित की जा रही हैं। उन्होंने आने वाले दिनों में साहित्य अकेडमी द्वारा आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों विशेषकर अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन और ट्रांसजेंडर कवि सम्मेलन के बारे में भी जानकारी दी। साहित्य अकेड़मी की वर्ष 2018 की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि पिछले वर्ष अकेडमी द्वारा 501

- अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मेलन का पहला दिन
- मृणाल मिरी द्वारा साहित्य अकेडमी प्रदर्शनी का उद्घाटन

साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें नागालैंड, मिजोरम और अंडमान और निकोबार में पहली बार कार्यक्रम आयोजित किए गए। आगे उन्होंने अकेडमी द्वारा 493 पुस्तकें प्रकाशित करने की जानकारी दी। अकेडमी 197 से ज्यादा पुस्तक मेलों में शामिल हुई और पुस्तकों की बिक्री राशि 4.25 करोड़ रही। उद्घाटन के पश्चात सचिव ने विशिष्ठ अतिथियों को पूरी प्रदर्शनी का अवलोकन कराया।

साहित्य अकेडमी भाषा सम्मान अर्पण समारोह रवींद्र भवन परिसर में आयोजित हुआ। साहित्य अकेडमी द्वारा भाषा सम्मान कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य एवं क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रोत्साहन में उल्लेखनीय योगदान करने वाले विद्वानों/लेखकों को प्रदान किए जाते हैं।

साहित्योत्सव में आठ को सम्मान

नई दिल्ली (व.सं.)। साहित्य अकादमी के छह दिवसीय साहित्योत्सव का सोमवार से आगाज हो गया। लेखक व पूर्व राज्य सभा सदस्य पद्म भूषण मृणाल मिरी ने इसका शुभारंभ किया। पहले दिन आठ रचनाकारों को भाषा सम्मान से नवाजा गया।

इसमें उत्तरी क्षेत्र से योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरुण', पूर्वी क्षेत्र से गगनेंद्र नाथ दास, पश्चिमी क्षेत्र से शैलजा शंकर बापट तथा कोशली-संबलपुरी के लिए प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी, हलधर नाग, पाइते भाषा के लिए एच. नेंगसाड़ और हरियाणवी के लिए हरिकृष्ण दिवेद्धी व शमीम शर्मा को अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने यह सम्मान दिया।

पुरस्कार के लिए 24 पुस्तकें चयनित

नई दिल्ली (व.सं.)। साहित्य अकादमी ने सोमवार को अनुवाद पुरस्कार 2018 की घोषणा कर दी है। इसमें अकादमी के अध्यक्ष डॉ चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में रवीन्द्र भवन में आयोजित कार्यकारी मंडल की बैठक में 24 पुस्तकों का चयन अनुवाद पुरस्कार के लिए किया गया है।

भारत सरकार

लोक उद्यम चयन बोर्ड

ऑयल इंडिया लिमिटेड

में

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

पद के लिए आवेदन आमंत्रित करता है।

लोक उद्यम चयन बोर्ड में आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि **04 अप्रैल, 2019 (15.00 बजे तक)** है।

जानकारी के लिए वेबसाइट

http://www.pesb.gov.in

में लॉग इन करें।